SHABDBRAHM E-ISSN: 3049 4230
VOLUME 1, ISSUE 2, OCTOBER 2025

एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना और सरदार वल्लभभाई पटेल की राष्ट्रीय एकीकरण दृष्टि: एक समकालीन विश्लेषण

प्रो. ललित चावडा

संस्कृत विभाग

सी.बी.पटेल आर्ट्स कॉलेज, नडियाद

सारांश

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ भाषा, संस्कृति, धर्म, जाति, परंपरा और भौगोलिक संरचना में व्यापक विविधता विद्यमान है। इन विविधताओं के बावजूद भारत की पहचान एक सशक्त, अखंड और संपन्न राष्ट्र के रूप में बनी रही है। स्वतंत्रता के बाद भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती राष्ट्रीय एकीकरण की थी, जिसे साकार करने में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका ऐतिहासिक रही। उन्होंने 562 से अधिक देशी रियासतों का शांतिपूर्ण विलय कर भारत की राजनीतिक एकता को सुदृढ़ किया। समकालीन भारत में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" अभियान उसी राष्ट्रीय एकता की भावना को सांस्कृतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर सशक्त करने का प्रयास है। यह शोध पत्र "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की संकल्पना और सरदार पटेल की राष्ट्रीय एकीकरण दृष्टि के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए उनकी समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करता है। यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि सरदार पटेल का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण आज भी भारत की एकता, अखंडता और सामाजिक समरसता के लिए मार्गदर्शक है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय आह्वानो, उत्तेजनाओं एवं प्रयत्नों से प्रेरित भारतीय राजनीतिक संगठनों द्वारा संचालित आंदोलन था। देश के युवकों को राष्ट्र की एकता और अखंडता का भान करने के लिए लौह पुरुष सरदार पटेल का नाम ही काफी है, जिन्होंने राष्ट्रहित हेतु अपना जीवन समर्पित किया। सरदार पटेल ने आधुनिक भारत के लिए आचार्य चाणक्य की भांति अपनी भूमिका को निभाया है, उन्होंने लगभग 562 रियासतों का

भारत में विलय करके भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत के प्रथम गृह मंत्री और प्रथम उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को लौह पुरुष का दर्जा प्राप्त था। सरदार पटेल नवीन भारत के निर्माता, राष्ट्रीय एकता के बेजोड़ शिल्पी थे ।

मुख्य शब्द: एक भारत श्रेष्ठ भारत, सरदार वल्लभभाई पटेल, राष्ट्रीय एकीकरण, भारतीय राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक एकता, एकता एवं अखण्डता, अनुपम, सम्प्रदायिकता, दूरदर्शिता, विविधता, कर्त्तव्यनिष्ठा, अद्‌वितीयता, निरपेक्ष, तथ्य, आदि ।

प्रस्तावना

भारत की राष्ट्रीय पहचान उसकी विविधता में निहित एकता से निर्मित हुई है। यहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म, रीति-रिवाज और सांस्कृतिक परंपराएँ सहअस्तित्व में पनपी हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत केवल विदेशी शासन से मुक्त होने की प्रक्रिया से नहीं गुजर रहा था, बल्कि आंतरिक विघटन, सांप्रदायिक तनाव, क्षेत्रीय अस्मिताओं और देशी रियासतों की समस्या जैसी जटिल चुनौतियों का सामना भी कर रहा था। ऐसे समय में राष्ट्रीय एकीकरण भारत की सर्वोच्च आवश्यकता बन गया।

SHABDBRAHM

सरदार वल्लभभाई पटेल, जिन्हें “लौह पुरुष” कहा जाता है, ने अपने दृढ़ संकल्प, प्रशासनिक कुशलता और राष्ट्रभक्ति के माध्यम से भारत की राजनीतिक एकता को साकार किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता तभी सार्थक होगी जब भारत एक अखंड राष्ट्र के रूप में संगठित होगा।

वास्तव में सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय एकता एवं अखण्ड़ता के प्रतीक थे, क्योंकि भारत एक विशाल एवं विविध संस्कृतियों वाला देश है, जहां अनेकों भाषाओं, धार्मिक संस्कृतियों तथा समुदायों के लोग निवास करते हैं। स्वतत्रंता प्राप्ति के समय भारत की सबसे बड़ी समस्या राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा देशी रियासतों के एकीकरण की थी। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इस अखण्ड़ भारत के राजनीतिक मानचित्र को एकता के सूत्र में पिरोकर एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जिसकी कही मिसाल नहीं मिलती है। इस शोध पत्र को निरपेक्ष,

तथ्यों, कथनों, एवं अध्ययनों के आधार पर सरदार पटेल की राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा देशी रियासतों के एकीकरण में भूमिका के साथ ही समस्या का समाधान करने के प्रयास किए जा रहे है।

वर्तमान समय में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम उसी एकता की भावना को पुनर्जीवित करने का एक संगठित प्रयास है। यह पहल भारत की विविध सांस्कृतिक पहचान को सम्मान देते हुए राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का माध्यम बनती है। इस शोध पत्र में सरदार पटेल की राष्ट्रीय एकीकरण दृष्टि और "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की संकल्पना के वैचारिक साम्य और समकालीन महत्व का अध्ययन किया गया है।

भारत को अखंड बनाए रखने के लिए लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी की महत्वपूर्ण भूमिका है। सरदार पटेल ने आधुनिक भारत के लिए आचार्य चाणक्य की भांति अपनी भूमिका को निभाया है, उन्होंने लगभग 562 रियासतों का भारत में विलय करके भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सरदार वल्लभभाई पटेल का व्यक्तित्व आधुनिक भारत का राष्ट्रीय चेहरा है जब हम भारत की बात करते हैं तो इतिहास का अध्ययन सरदार पटेल के बगैर अधूरा सा लगता है। स्वतंत्र भारत की हर छोटी बड़ी रियासतों को एकता के सूत्र में बांधने का काम किया उन्होंने देश के सभी प्रमुख नेताओं से यह अपील की कि वह जनता को एकता के सूत्र में बांधकर रखने का कार्य करें जिससे भारत में किसी भी प्रकार का धर्म व जाति के आधार पर विवाद ना हो पाए और भारत स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद पूरी तरह से एकता के सूत्र में बंधा हुआ हो, तभी भारत एक विकासशील राष्ट्र की ओर अग्रसर रह सकता है, और विकसित राष्ट्र बन सकता है भारत को विश्व शक्ति तभी बनाया जा सकता है जब भारत में राष्ट्रीय एकता की पूर्ण स्थापना हो, उनके द्वारा किए गए साहसिक कार्यों की वजह से ही उन्हें लौह पुरुष, सरदार जैसी उपाधियों से नवाजा गया । भारत के प्रथम गृह मंत्री और प्रथम उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को लौह पुरुष का दर्जा प्राप्त था ।

शोध के उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. "एक भारत श्रेष्ठ भारत" अभियान की अवधारणा और उसके मूल भाव को स्पष्ट करना।

2. सरदार वल्लभभाई पटेल की राष्ट्रीय एकीकरण दृष्टि का विश्लेषण करना।

3. स्वतंत्रता के पश्चात भारत के राजनीतिक एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका का मूल्यांकन करना।

4. सरदार पटेल के विचारों और "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की संकल्पना के बीच वैचारिक समानताओं को रेखांकित करना।

5. समकालीन भारत में राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में सरदार पटेल की प्रासंगिकता को स्थापित करना।

6. राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए देशी रियासतों के निर्माण मे सरदार पटेल भूमिका का परीक्षण करना आदि।

SHABDBRAHM

7. राष्ट्रीय एकता एवं समानता के लिए भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों में सरदार पटेल की भूमिका को जानना।

8. राष्ट्रीय एकता के लिए सरदार पटेल की हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने की अवधारणा का अध्ययन करना।

9. राष्ट्रीय एकता एवं समानता के प्रति सरदार पटेल की सांप्रदायिकता की भावना को जानना।

संकलन के स्रोत

यह शोध पत्र पूर्णतः द्वितीयक अध्ययन स्त्रोतों पर आधारित होगा। इन द्वितीयक स्रोतों में सार्वजनिक प्रलेख की प्रकाशित सामग्री में विभिन्न पुस्तकें, संदर्भ-सूचियाँ, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकालय, अप्रकाशित लघु शोध ग्रंथ, शोध प्रबंध, शोध-पत्र एवं लेख आदि सम्मिलित है।

मुख्य विश्लेषण

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना

"एक भारत श्रेष्ठ भारत" भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच सांस्कृतिक, शैक्षिक और भावनात्मक संबंधों को मजबूत करना है। यह पहल भारत की विविधताओं को विभाजन का कारण न मानकर शक्ति का स्रोत मानती है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत–

- o विभिन्न राज्यों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान।
- o भाषा और साहित्य का परिचय।
- o पारंपरिक कला, खानपान और लोकसंस्कृति का प्रचार।
- o राष्ट्रीय चेतना और भावनात्मक एकता का विकास।

- **सरदार पटेल की एकीकरण दृष्टि और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत'**

सरदार पटेल का एकीकरण दृष्टिकोण और "एक भारत श्रेष्ठ भारत" अभियान एक ही वैचारिक धारा के दो रूप हैं। जहाँ पटेल ने राजनीतिक एकीकरण किया, वहीं "एक भारत श्रेष्ठ भारत" सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता को सशक्त करता है।

सरदार पटेल ने अखण्ड भारत के निर्माण में जो भूमिका निभाई उसकी तारीफ करते हुए मैनचेस्टर गाड़ियस ने कहा था कि "सरदार पटेल न सिर्फ स्वतंत्रता सग्रांम के संगठक थे, बल्कि सग्रांम खत्म होने के बाद वे एक नए राष्ट्र निर्माण के वास्तुकार भी थे। ऐसा बहुत कम हुआ है कि एक ही आदमी विद्रोह के साथ राजनीतिज्ञ के रूप में भी सफल हुआ हो। सरदार पटेल निश्चित ही इसके अपवाद थे।" सरदार पटेल द्वारा राष्ट्रीय एकता के लिए देश हित में लिए गए निर्णयों तथा देशी रियासतों का एकीकरण कर न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में एकता की मिसाल कायम की जो कि उनकी दृढ़ता, सतत् प्रयास और कुशलता की मिसाल मानी जाती है।

सामान्य अर्थ में देखा जाएं तो राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का तात्पर्य विविधता को समाप्त करना ही नहीं, बल्कि इस विविधता में एकरूपता लानें से है अर्थात् राष्ट्रीय एकता का अर्थ "विविधता में एकता" से है। अतः हम कह सकते है कि "राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का आशय नागरिकों की निष्ठा राष्ट्र के प्रति निर्मित करना है, जबकि दूसरी ओर देखा जाएं तो एकीकरण का आशय भी एकता लाना ही है"। अर्थात् प्रत्येक नागरिक सर्वप्रथम स्वयं को भारतीय समझे, तत्पश्चात् वह अपनी भाषा एवं संस्कृति का सम्मान करे। माननीय रावजीभाई ने अपने शब्दों में कहा कि देश में स्वराज्य की स्थापना होने पर अपने ठोस अनुभवाधार पर भारत के गृहमंत्री और आन्तरिक विषयों के मंत्री होने के नाते सरदार पटेल ने अखण्ड भारत का भव्य और सुन्दर भवन खड़ा किया था।

सरदार पटेल में बचपन से ही राष्ट्रीय एकता तथा समानता के गुण विद्यमान थे। इसका उदाहरण उनके स्कूल की इस घटना से चलता है कि वो जिस स्कूल में पढ़ते थे, वहां के एक अध्यापक ने अपना मुनाफा कमाने के लिए सभी बच्चों से स्कूल से ही पुस्तकें खरीदने की घोषणा कर दी थी और कहा कि कोई भी छात्र बाहर से पुस्तकें नहीं खरीदेगा उस पर सभी बच्चें राजी भी हो गए, परन्तु सरदार पटेल ने इसका विरोध किया और एक नेता की तरह भाषण देंने लगे। सभी बच्चें भी उनका भाषण सुनकर उनके पक्ष में हो गए तथा सरदार पटेल का साथ देनें का वादा किया अन्त में अध्यापक को हारकर अपना पुस्तकों का व्यापार बन्द करना पड़ा, जो सभी की समानता, मुनाफाखोरी के खिलाफ था।1 यह घटना हमें उनकी निडरता, राष्ट्रवादीता तथा समानता के गुणों का स्मरण कराती है।

02 सितम्बर, 1946 में जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार में सरदार वल्लभ भाई ने देश के गृहमंत्री पद की शपथ ली तथा इस पद पर रहते हुए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उनका राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता में सबसे महत्वपूर्ण कार्य भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा का गठन करना था।2 इस कार्य के लिये उन्हें बहुत से ऐतिहासिक

निर्णय लेने पड़े थे, वे सदैव अनुकरणीय हैं। अतः इसी कारण सरदार पटेल को भारत में प्रशासनिक सेवाओं का जनक भी कहा जाता है।

राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के निर्माण के लिए हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने तथा उसे संविधान में सम्मिलित कराने का प्रथम प्रयास सरदार पटेल ने किया, क्योंकि उस समय भारत की राष्ट्रीय एकता में सबसे बड़ी समस्या राष्ट्र भाषा की भी थी, जबकि हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने की सर्वप्रथम चर्चा "राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के दौरान महात्मा गांधीजी ने की थी। सरदार पटेल को भारत में अनेकों क्षेत्रिय भाषाओं के कारण के कई समस्याओं तथा परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, परन्तु उन्होंने अपने लक्ष्य से विचलित हुए देश की एकता एवं अखण्ड़ता के लिए हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए संविधान सभा में अपना मजबूत पक्ष रखा तथा देशवासियों को स्पष्ट संदेश दिया कि "हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा अथवा राज भाषा होगी और होनी चाहिए"। सरदार पटेल का यह संदेश देश की एकता एवं अखण्ड़ता के लिए था, जिसमें उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक पूरे देश तथा देशवासियों को एकता के सूत्र में जोड़ने की उनकी परिकल्पना थी। अतः 14 सितम्बर, 1942 को भारतीय संविधान में हिंदी को सांवैधानिक रूप से "राज भाषा" घोषित किया गया, जिसका भारतीय संविधान में संविधान के भाग-17, अनुच्छेद 343-345 ब्रेक वर्णन हैं।3 उसी के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह सब सरदार पटेल की दूरदर्शिता, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं परिश्रम द्वारा संभव हो पाया है।

राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के निर्माण तथा सभी वर्गों के उत्थान लिए उन्होंने कई स्वतंत्रता आंदोलनों राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के निर्माण तथा सभी वर्गों के उत्थान लिए उन्होंने कई स्वतंत्रता आंदोलनों में भाग लिया, जिसमें सबसे प्रमुख तथा सबसे बड़ा आन्दोलन 1917 का खेड़ा आन्दोलन था, जिसमें उन्होंने सरकार की असीमित लगान वसूली का विरोध किया था, अन्त में सरकार को लगान वसूली माफ करनी पड़ी। 1922 को अहमदाबाद की कपड़ा मंडी में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार, 1923 को नागपुर में झंडा आन्दोलन में भागीदारी

तथा बोरसद सत्याग्रह का सफल नेतृत्व किया था। उन्होंने 1927 में बारदोली किसान आन्दोलन का सफल आन्दोलन किया तथा महात्मा गाँधीजी ने उनको सरदार कहकर पुकारा और वे सरदार पटेल कहे जाने लगे। 1931 में कांग्रेस के करांची अधिवेशन की अध्यक्षता की जिसमें सभी धर्मों तथा व्यक्ति समानता के लिए मौलिक अधिकार विषय पास करवाए थे।4 सन् 1936 वर्धा में कांग्रेस कार्यसमिति ने सरदार पटेल को 'पार्लियामेंट्री समिति' का अध्यक्ष बनाया तथा सभा के चुनावों की रणनीति, उम्मीदवारों का चयन और कांग्रेस के सिद्धान्तों और सभी को साथ लेकर चुनाव कराने की जिम्मेदारी दी गई जिसमें कांग्रेस को भारी विजय प्राप्त हुई थी।5 उनके ये सभी निर्णय उनकी नेतृत्व शक्ति, दूरदर्शिता, समानता तथा राष्ट्रीय एकता के निर्माण का संकेत देते है।

सरदार पटेल ने राजनीतिक पदों पर रहते हुएभी कई महत्वपूर्ण निर्णय राष्ट्रीय एकता एवं अखण्ड़ता को मध्य नजर रखते हुए बड़ी सूझबूझ व बुद्धिमत्ता से किए थे। सन् 1934 में अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति ने उन्हें पूना अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया, जिसमें उन्हें राज्य विधान सभाओं के चुनावों के उम्मीदवार तय करना, चुनाव हेतु प्रचार-प्रसार, संचालन समिति के दिशा-निर्देशानुसार विजय की रणनीति तैयार करने की जिम्मेदारी दी गयी, जिसमें उन्होंने पार्टी को विजयी दिलवायी। उनका दूसरा प्रमुख निर्णय भारत शासन अधिनियम-1935 के प्रावधानुसार 1937 के प्रांतीय विधान सभाओं के चुनावों का श्रेष्ठ संचालन करना था। उनका तीसरा प्रमुख कार्य सन् 1937 में मुम्बई में नरीमन की कांग्रेस विधायक दल के नेता पद की उम्मीदवारी का समर्थन नहीं करना था, क्योंकि नरीमन ने 1934 में केन्द्रीय विधान सभा के चुनावों में दलीय अनुशासन को भंग किया था।6 सरदार पटेल द्वारा लिए गये सभी निर्णय उनकी पारदर्शिता, राष्ट्रीय एकता एवं समानता के अनुपम उदाहरण है।

सरदार पटेल ने गृहमंत्री के रूप में राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता सबसे महत्वपूर्ण कार्य देशी रियासतों के एकीकरण का था। यह कार्य उन्होंने भारत के गृह सचिव पी. वी. मेनन के साथ मिलकर किया था। मूल संविधान में राज्यों को चार श्रेणियों 'ए' 'बी' 'सी' 'डी' में विभाजित

किया गया था। 15 अगस्त 1947 के बाद सरदार पटेल ने भारत में 562 से अधिक छोटी बड़ी रियासतों को भारत में मिलाने का कार्य तीन चरणों में पूर्ण किया, जिसके प्रथम चरण में 21 देशी रियासतों को उन प्रान्तों में मिला दिया गया, जो भौगोलिक रूप में उनके निकट थे। दूसरे चरण में 61 देशी रियासतों को केन्द्र शासित क्षेत्र के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। तीसरे तथा अंतिम चरण में अनेक राज्यों के समूहो का विलय करके राज्यों का निर्माण किया गया, जिसके अन्तगत सौराष्ट्र, त्रावणकोर, कोचीन व 275 देशी रियासतों कोमिलाकर 5 संघीय राज्यों का निर्माण किया गया था।7 1956 में राज्य पुर्नगठन आयोग द्वारा इन चारों श्रेणियों ए, बी, सी, डी को समाप्त करते हुए भारत में 16 बड़े राज्यों तथा 3 केन्द्र शासित प्रदेशों की स्थापना की गई थी।

रियासतों के एकीकरण में सर्वप्रथम समस्या उड़ीसा तथा छत्तीगढ़ रियासतों में उत्पन्न हुई थी। उस समय उड़ीसा राज्य में कुल 26 रियासतें तथा छत्तीसगढ़ राज्य में 15 रियासतें थी, जिनमें सबसे बड़ी रियासत बस्तर तथा सबसे छोटी रियासत शक्ति थी। 14 दिसम्बर, 1947 को सरदार पटेल ने छोटे-बड़े राजाओं के साथ बैठक करके रियासतों के विलयपत्रों पर तथा 15 अगस्त, 1947 को पटेल नागपुर पहुँच कर छत्तीसगढ़ के राजाओं से भेंट कर भारतीय संघ में विलय के लिए उन्हें राजी करते है और मध्य प्रान्त में विलीन हो जाते है।"8 दूसरी और सौराष्ट्र राज्य में उस समय दो सौ से अधिक छोटे-बड़े राज्य व ताल्लुके थे, जिनमें से काठियावाड़ में 14 सलामी रियासतें, 17 गैर सलामी रियासतें तथा 119 अन्य छोटी रियासतें थी। 13 जनवरी, 1948 को इस राज्य संघ के निर्माण के संधि पत्र पर सभी राजाओं ने हस्ताक्षर कर उसका नाम "सौराष्ट्र राज्य संघ" रखा गया।9 ये सभी कार्य तथा निर्णय गृह मंत्रालय के अधीन सरदार पटेल के सुझावों तथा गृह विभाग के सचिव वी. पी. मेनन के सहयोग द्वारा ही सम्पन्न किए गए थे।

राजस्थान में उस समय 19 रियासतें और 3 ठिकाने कुशलगढ़ (बांसवाडा), लावा (जयपुर) तथा दांता (टोंक) थे। इन सभी रियासतों का भारतीय संघ में विलय सरदार पटेल

(गृहमंत्री) की देखरेख में 7 चरणों में पूर्ण हुआ था। जो कि सन् 1948 से प्रारम्भ होकर 1 नवम्बर, 1956 तक पूर्ण हुआ था। पेप्सू संघ के अन्तगत पटियाला, जीन्द, नभा, फरीदकोट, मलेरकोटला और कपुरथला के अलावा दो गैर सलामी रियासतें (कलसिया व नालगढ़) भी सम्मिलित थी। भारतीय संघ में पटियाला तथा पूर्वी पंजाबी रियासतों के संघ पेप्सू का विलय 15 जुलाई, 1948 को किया था।10 5 मई, 1948 को इस संघ को कानूनी मान्यता प्रदान करते हुए सरदार पटेल इस विजय पत्र पर हस्ताक्षर किए गए थे। विन्ध्य प्रदेश का भारत में विलय मार्च 1948 में हुआ जियमे बुन्देलखण्ड तथा बघेलखण्ड के सभी राजाओं ने अपनी सहमती प्रदान करते हुए विलय पत्रों पर हस्ताक्षर किए तथा 2 अप्रैल, 1948 को नये राज्य "विन्ध्य प्रदेश" का उद्घाटन खान एवं विधुत मंत्री एन. वी. गॉडलिक द्वारा किया था, जिसका कुल क्षेत्रफल 24,598 वर्गमील तथा कुल जनसंख्या 3,56,900 थी।"11

भारत में देशी रियासतों के एकीकरण के समय में सरदार पटेल को उनकी बीमारी के कारण अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। 14 जनवरी, 1949 को राजस्थान के उदयपुर में भाषण देते हुए पटेल ने कहा "बहुत समय से हम तथा अनेको नरेश इस 'अखण्ड भारत के निर्माण की कल्पना कर रहे थे। एक सामान्य भावना थी कि वर्तमान स्थिति में अलग-अलग रहने से लाभ के बजाय हानि अधिक है।"12 अतः भारत तथा देशी रियासतों की भलाई के लिए देशी रियासतों का एकीकरणअनिवार्य हो गया है। उसी समय सरदार पटेल ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें आपसी मतभेद भुलाकर एक होकर देशहित के लिए कार्य करना चाहिए। "भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपना उचित स्थान प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय एकता अनिवार्य है। हमें जाति पूर्वाग्रह तथा साम्प्रदायिक भावनाओं का त्याग करना होगा। हम सबमें भाईचारे की भावना का विकास करना होगा।" भाषण के अन्त में सरदार ने कहा "आप लोग अपने को भाग्यशाली समझें कि आप एक ऐसे क्रांतिकारी परिवर्तन के समय रह रहे है, जहां आपका भविष्य सुरक्षित है।"13 अर्थात् उन्होंने देशी रियासतों तथा अपनी प्रिय जनता को सामाजिक समरसता, भाई चारा तथा एक नये अखण्ड भारत निर्माण

का संदेश दिया था। सरदार पटेल देश की एकता, अखण्डता के लिए साम्प्रदायिकता के आधार पर प्रतिनिधित्व के तर्क की निन्दा की थी। सरदार पटेल हिंदु-मुस्लिम एकता, अखण्डता को एक बनाए रखने के पक्ष में थे। 03 जून, 1947 को मांउट बैटन योजना घोषित हुई, जिसमें भारत विभाजन के सिद्धांत को स्वीकृति दी गई थी। इस योजना को कांग्रेस तथा मुस्लिम के लोगो ने स्वीकार कर लिया था। सरदार पटेल ने इस विभाजन के लिए सहमति दी, क्योंकि वे जानते थे कि भारत को संयुक्त रखने के लिए अब भारत पाकिस्तान का विभाजन हो जाना चाहिए अन्यथा एक अखण्डता भारत की कल्पना करना व्यर्थ होगी।14 20 मार्च 1948 को राजस्थान में मत्स्य संघ का उद्घाटन करते हुए एम. वी. गाड़लिक ने कहा कि "यदि महात्मा गांधी हमारी स्वतंत्रता के निर्माता है तो सरदार पटेल भारतीय संघ के विश्वकर्मा है।"15 नवीन भारत का इतना बड़ा भाग शताब्दियों के पश्चात् एक शासन व्यवस्था में लाने में सरदार पटेल की भूमिका सराहनीय रही है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त तथ्यों, कथनों, अध्ययनों एवं विवरणों के आधार पर हम कह सकते है कि राष्ट्रीय एकता, अखण्ड़ता एवं समानता के लिए साम्प्रदायिकता की भावना, एक राष्ट्र भाषा, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों में भूमिका तथा देशी रियासतों का एकीकरण एक गंभीर तथा जटिल समस्या थी, जो भारत की भावी एकता, अखण्डता तथा विकास को प्रभावित कर रही थी। देशी रियासतों के भारतीय संघ में विलय की प्रक्रिया इतनी जल्दी पूर्ण होने में लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की विवेकपूर्ण शक्ति, कर्मनिष्ठता, तथा दूरदर्शिता रही है। अतः हम कह सकते हैं कि सदार पटेल नवीन भारत के निर्माता, राष्ट्रीय एकता के बेजोड़ शिल्पी थे। आने वाली पीढ़िया उनको आधुनिकराष्ट्र निर्माता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में याद करती रहेगी।

स्पष्ट है कि “एक भारत श्रेष्ठ भारत” की संकल्पना और सरदार वल्लभभाई पटेल की राष्ट्रीय एकीकरण दृष्टि एक-दूसरे की पूरक हैं। सरदार पटेल ने जिस राजनीतिक एकता की

नींव रखी, उसी पर आज का भारत सांस्कृतिक, सामाजिक और भावनात्मक एकता का निर्माण कर रहा है।

सरदार पटेल का योगदान केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि वैचारिक और मार्गदर्शक है। उनका राष्ट्रवादी दृष्टिकोण आज भी भारत की एकता, अखंडता और समरसता के लिए प्रेरणास्रोत है। "एक भारत श्रेष्ठ भारत" अभियान उनके सपनों के भारत को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अतः यह कहा जा सकता है कि यदि भारत को श्रेष्ठ बनाना है, तो सरदार पटेल की एकीकरण भावना को केवल स्मरण नहीं, बल्कि व्यवहार में भी उतारना होगा।

संदर्भ सूची

1. वर्मा शिवांगी, भारत के निर्माता सरदार वल्लभ भाई पटेल, स्टार प्रिन्ट ओ बाइन्ड, पब्लिकेशन, दिल्ली, 2015, पृ.स. 7-8
2. कुमार रविन्द्र, पूर्वोक्त, पृ.स. 95-99
3. कश्यप सुभाष, हमारा संविधान, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.स. 262-267
4. तिवारी विनोद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2014, पृ.स. 25-62
5. कुमार रविन्द्र एवं चौपड़ा पी. एन., सरदार वल्लभभाई पटेल के सामाजिक व राजनीतिक विचार, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1991, पृ.स. 68-79
6. कुमार रविन्द्र, पूर्वोक्त, पृ.स. 51-64
7. 10. मेहरोत्रा डॉ. एन. सी. एण्ड कपूर डॉ. रजना, सरदार वल्लभ भाई पटेल व्यक्ति एवं विचार, आत्माराम एण्ड सन्स पब्लिकेशन, दिल्ली, 2012, पृ.स. 169
8. मेहरोत्रा डॉ. एन. सी. एण्ड कपूर डॉ. रंजना, पूर्वोक्त, पृ.स. 161-162
9. सिंह प्रेमलाल एवं सिंह सुधा, पूर्वोक्त, पृ.स. 85

10. निदारिया, भगवती प्रसाद, लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, कीन बुक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014, पृ.स. 66-67

11. सिंह प्रेमलाल एवं सिंह सुधा, पूर्वोक्त, पृ.स. 90.

12. मेहरोत्रा डॉ. एन. सी. एण्ड कपूर डॉ. रंजना, पूर्वोक्त, पृ.स. 164

13. जी. एम. नन्दूकर (सम्पादित), सरदार पटेल इन दि टियुल विद् दि मिलियन्स, खण्ड-2, 1973, पृ.स. 40

14. मेहरोत्रा डॉ.एन. सी. एण्ड कपूर डॉ. रंजना, पूर्वोक्त, प्र.स.164

15. मेनन वी. पी., दी स्टोरी ऑफ दी इंटीग्रेशन ऑफ दी इंडियन स्टेट्स, ओरियन्टल लांगमैन पब्लिकेशन, कलकत्ता, पृस. 121-122.

SHABDBRAHM